"सिद्धांतहीन गठबंधनः नेपाल में राजनीति

द हिन्दू

पेपर- II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध)

यह कहावत कि न कोई स्थायी दुश्मन और न कोई स्थायी दोस्त, राजनीति में सिर्फ स्थायी हित ही दुनिया भर के लोकतंत्र में राजनीतिक गठबंधनों के बदलने की प्रक्रिया में कई मोड़ ला सकते हैं। लेकिन नेपाल की राजनीति के लिए यह कहावत कम ही पड़ेगी, जहां गठबंधन बनाने की कला लंबे अरसे से एक प्रहसन रही है। बीते शनिवार को, नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी सेंटर) के निवर्तमान प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल अनुमान के मुताबिक विश्वास मत हार गए। कुल 275-सदस्यीय प्रतिनिधि सभा में सिर्फ 63 सदस्यों ने उनका समर्थन किया, जबकि 194 सांसदों ने विश्वास प्रस्ताव के खिलाफ मतदान किया। खड्क प्रसाद ओली - उन्हें फिर से प्रधानमंत्री बनाया गया है - के नेतृत्व वाली नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (एकीकृत मार्क्सवादी-लेनिनवादी) द्वारा सीपीएन (एमसी) के नेतृत्व वाली सरकार से समर्थन वापस ले लेने और विपक्षी शेर बहादुर देउबा के नेतृत्व वाली नेपाली कांग्रेस के साथ हाथ मिला लेने के बाद यह हार तय थी। दहल करीब दो साल तक अपने पद पर बने रहने में कामयाब रहे और वह भी तीन बार विश्वास मत हासिल करने के बाद - यह सब साझेदार बदलने के उनके फैसले के चलते जरूरी बन गया था। नवंबर 2022 के चुनावों में तीसरे स्थान पर रहने के बावजूद, सीपीएन (एमसी) ने सरकार बनाई थी और दहल देउबा के नेतृत्व वाले एनसी एवं ओली के नेतृत्व वाले सीपीएन (यूएमएल) के बीच के मतभेदों का फायदा उठाकर ऐसा करने में कामयाब रहे थे। इन दोनों दलों ने 2022 में क्रमशः 89 और 78 सीटें जीती थीं तथा अब इस व्यवस्था के साथ गठबंधन सरकार बनाई है कि ओली और देउबा शेष बचे कार्यकाल की आधी-आधी अवधि के लिए बारी-बारी से प्रधानमंत्री का पद संभालेंगे।

- **जनवरी 2023 में शक्ति परीक्षणः** प्रचंड ने दिसंबर 2022 में तीसरी बार शपथ ली (वे इससे पहले 2008-09 और 2016-17 में प्रधानमंत्री रह चुके हैं)। नेपाली कांग्रेस और सीपीएन-यूएमएल सहित लगभग सभी दलों से समर्थन प्राप्त करने के बाद उन्होंने जनवरी 2023 के फ्लोर टेस्ट में 268 वोट जीते।
- **मार्च 2023 में दूसरा फ्लोर टेस्टः** सीपीएन-यूएमएल और राजशाहीवादी राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी द्वारा समर्थन वापस लेने के बाद प्रचंड को मार्च 2023 में दूसरी बार मतदान कराना पड़ा।
- इन पार्टियों ने नेपाली कांग्रेस के रामचंद्र पौडेल को राष्ट्रपति पद के लिए प्रचंड के समर्थन के विरोध में समर्थन वापस ले लिया। नेपाली कांग्रेस ने इस शक्ति परीक्षण के दौरान प्रचंड सरकार का समर्थन किया।
- **मार्च 2024 में तीसरा फ्लोर टेस्टः** इस वर्ष 4 मार्च को प्रचंड ने नेपाली कांग्रेस (देउबा के नेतृत्व वाली) को छोड़ दिया और सीपीएन-यूएमएल (केपी शर्मा ओली के नेतृत्व वाली) में वापस चले गए, जिससे संसद में मतदान की स्थिति उत्पन्न हो गई।
- **जुलाई 2024 में चौथा फ्लोर टेस्टः** प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल विश्वास मत हार गए। कुल 275-सदस्यीय प्रतिनिधि सभा में सिर्फ 63 सदस्यों ने उनका समर्थन किया, जबकि 194 सांसदों ने विश्वास प्रस्ताव के खिलाफ मतदान किया।

जब से नेपाल 1990 में पूर्ण राजशाही से संवैधानिक और फिर 2008 में पूर्ण गणतंत्र में तब्दील हुआ है, इसकी लोकतांत्रिक राजनीति में अस्थिरता और सत्ता में निरंतर बदलाव देखा गया है। इसके चलते वहां की शासन व्यवस्था लचर हुई है। गृह युद्ध और राजशाही को उखाड़ फेंकने के बाद, संघवाद से संबंधित संवैधानिक सुधारों की पहल और हाशिए पर मौजूद ताकतों के लिए प्रतिनिधित्व की गारंटी के बावजूद, नतीजे एक "अल्प विकसित देश" वाली नेपाल की हैसियत को कायम रखने वाले ही रहे हैं।

यह बिल्कुल साफ है कि तीनों प्रमुख दलों के नेतृत्व ने किसी भी तरह से सत्ता में बने रहने में ज्यादा रुचि दिखाई है, भले ही वे चुनाव पूर्व गठबंधन से प्रेरित रहे हों या नहीं। इसके अलावा, देश के सामाजिक दरारों को दर्शाने वाली संसदीय प्रणाली की अंतर्निहित अस्थिरता ने एक खास किस्म की गठबंधन की राजनीति को जन्म दिया है जो वैचारिक या सैद्धांतिक विचारों से कम और सत्ता की लालसा से कहीं ज्यादा प्रेरित है। इस किस्म की अस्थिरता और सत्ता पाने की सिद्धांतविहीन ललक से नेपाल के लोगों का लोकतांत्रिक प्रक्रिया से मोहभंग ही होगा। नेपाल के लिए शायद राष्ट्रपति प्रणाली बेहतर हो सकता है जो एक सीधे निर्वाचित राष्ट्र प्रमुख की इजाजत देता है।

नेपाल राजनीतिक अस्थिरता का अनुभव क्यों कर रहा है ?

- **जल्दबाजी में बनाया गया संविधान:** नेपाल में धर्मनिरपेक्ष संघीय लोकतांत्रिक गणराज्य बनने का निर्णय जल्दबाजी में लिया गया तथा इस पर बमुश्किल ही कोई चर्चा हुई, जिससे अस्थिरता को बढ़ावा मिला।
- **युवा लोकतंत्र:** एक युवा लोकतंत्र के रूप में, नेपाल को अनेक उथल-पुथल का सामना करना पड़ा है तथा अपनी चुनौतियों से निपटने के लिए उसके पास अनुभवी नेताओं और संस्थाओं का अभाव है।
- **हिंदू पहचान की हानि:** माओवादी विद्रोह के बाद देश दुनिया के एकमात्र हिंदू राज्य से धर्मनिरपेक्ष राज्य में परिवर्तित हो गया, जिससे भ्रम और असंतोष पैदा हुआ।
- **राजशाही बहाली की मांग:** कमजोर लोकतांत्रिक संस्थाओं के कारण, स्थिरता सुनिश्चित करने और लोकतंत्र की सुरक्षा के लिए राजशाही को बहाल करने की मांग की जा रही है।
- **संघीय व्यवस्था संबंधी चिंताएं:** वास्तविक संघीय व्यवस्था की स्थापना से नेपाल के भीतर संभावित फूट की आशंका उत्पन्न होती है।
- **भ्रष्टाचार और कुशासन:** व्यापक भ्रष्टाचार और कुशासन महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, जिससे नेपाल के लिए कोविड-19 के बाद की दुनिया में सफल होना मुश्किल हो जाएगा।

प्रारंभिक परीक्षा के संभावित प्रश्न (Prelims Expected Question)

प्रश्न : नेपाल के वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें-

1. नवंबर 2022 के चुनावों में पुष्प कुमार दहल की पार्टी ने तीसरे नंबर की पार्टी होने के बाद भी सरकार बना ली।
2. हाल ही में हुए फ्लोर टेस्ट में पुष्प कुमार दहल की सरकार गिर गई है।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

Que. Consider the following statements in the context of the current political scenario of Nepal-

1. In the November 2022 elections, Pushp Kumar Dahal's party formed the government despite being the third number party.
2. Pushp Kumar Dahal's government has fallen in the recently held floor test.

Which of the statements given above is/are correct?

(a) Only 1 (b) Only 2
(c) Both 1 & 2 (d) Neither 1 nor 2

उत्तर : C

मुख्य परीक्षा के संभावित प्रश्न व प्रारूप (Mains Expected Question & Format)

प्रश्न: नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता में योगदान देने वाले कारकों की चर्चा करें? क्या नेपाल में संसदीय प्रणाली की जगह अध्यक्षीय प्रणाली लागू करने की आवश्यकता है? चर्चा करें।

उत्तर का एप्रोच :

- उत्तर के पहले भाग में नेपाल की राजनीतिक अस्थिरता में योगदान देने वाले कारकों की चर्चा कीजिए।
- दूसरे भाग में नेपाल में संसदीय प्रणाली की जगह अध्यक्षीय प्रणाली लागू करने की आवश्यकता के पक्ष विपक्ष की चर्चा करनी है।
- अंत में अपने सुझाव देते हुए निष्कर्ष दें।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।